बी. ए. भाग-2
प्रधान - हिन्दी

रमेश कुमार यादव
हिन्दी - विभाग
डी. के. कॉलेज डुमराँव
बक्सर (बिहार)

'रश्मिरथी' काव्य के आधार पर भगवान श्री कृष्ण का चरित्र- चित्रण —

भगवान श्रीकृष्ण भारतवर्ष के अवतारी महापुरुषों में मान्य चौबीस अवतारों में से एक महत्वपूर्ण अवतार माने जाते है। उनके चरित्र की, उनकी लीलाओं को लेकर भारतवर्ष की सभी भाषाओं में बहुत कुछ लिखा गया है। मुरलीधर, रास-रचैया, और लीला बिहारी के साथ-साथ वास्तव में वे महाभारत के युद्ध के मुख्य सूत्रधार, आयोजन करने वाले पात्र भी है। वे अपने युग के एक महान नेता और राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने सदा अन्याय का विरोध किया। उनके सारे कार्यों का उद्देश्य ही अन्याय की समाप्ति करके न्याय की रक्षा और स्थापना करना था। धर्म की संस्थापना के लिए ही उनका अवतार हुआ माना जाता है।

श्रीकृष्ण चरित्र के दो रूप हमें महाभारत तथा श्रीमद्भागवत आदि ग्रन्थों में मिलते है। उनका पहला या बचपन वाला रूप तो अनेक प्रकार की मधुर लीलाओं से भरा हुआ है। उनका दूसरा रूप एक राजनेता का सफल रूप है। 'रश्मिरथी' काव्य में उनके भगवान के रूप की रक्षा करते हुए भी उस एक चतुर राज-नेता और रण-नेता के रूप को ही उभारा गया है।

सबसे पहले वे हमें काव्य के तीसरे सर्ग में पाण्डवों के दूत के रूप में दिखाई देते है। यहाँ वे न्याय के पक्ष का समर्थन करने के लिए

दूत बनकर दुर्योधन के दरबार में पहुंचते हैं। ताकि दुर्योधन को न्याय की राह पर चला कर होने वाले भयानक युद्ध को रोका जा सके। कवि के शब्दों में —

मैत्री की राह बताने को, सबको सुमार्ग पर लाने को,
दुर्योधन को समझाने को, भीषण विध्वंस बचाने को,
भगवान हस्तिनापुर आए,
पाण्डव का सन्देश लाए।

वे दुर्योधन को समझाने की कोशिश करते हैं। वे चाहते हैं कि दुर्योधन पाण्डवों को आधा राज दे देवे, पर जब यह उनके लिए तैयार नहीं होता, तो वे केवल पाँच गाँव ही पाण्डवों को देने की शर्त रखते हैं। पर दुष्ट दुर्योधन उनकी बात मानने के स्थान पर उन्हें पकड़ने की कोशिश करता है। तब वह अपना विराट रूप प्रकट करके उसे यह समझाने की फिर कोशिश करते हैं कि वह नाश से बचने के लिए अब भी उनकी न्यायपूर्ण बात मान ले। कवि ने इनके विराट रूप का काफी विस्तार से वर्णन किया है। यह वर्णन वास्तव में गीता के आधार पर किया गया है। ऐसा करके कवि ने स्पष्ट कर दिया कि वास्तव में कृष्ण भगवान का अवतार ही थे। इस प्रकार कवि ने राज नेता के साथ-साथ उनके अवतारी स्वरूप की भी रचना कर ली है।

कवि रामधारीसिंह दिनकर ने कृष्ण की युद्ध का भी विरोधी दिखाया है। युद्ध की भयानकता

का वर्णन करते हुए वे दुर्योधन को चेतावनी रूप में कहते हैं—

टकरायेंगे नक्षत - निकर, बरसेगी भू पर वह्नि प्रखर,
फण शेष नाग का डोलेगा, विकराल काल मुँह खोलेगा,
दुर्योधन ! रण ऐसा होगा,
फिर कभी नहीं जैसा होगा"।

परन्तु कृष्ण का यह सिद्धान्त भी नहीं कि दुष्टों से केवल भीख माँगी जाये। उनके सामने शान्ति का नारा लगाकर झुका जाये। इसी कारण जब दुर्योधन उनकी बात नहीं मानता, तो वे चतुर राजनेता और रण-नेता के समान उसे चुनौती भरे शब्दों में कहते हैं —

याचना नहीं, अब रण होगा,
जीवन-जय या कि मरण होगा।

फिर भी कवि ने उन्हें शान्ति की रक्षा के लिए चिन्तित दिखाया है। वे कर्ण से कहते हैं—

चिन्ता है, मैं क्या और करूँ,
शान्ति को छिपा किस ओर धरूँ ?

शान्ति-स्थापना की इच्छा से ही कृष्ण कर्ण को अपने साथ मिलाने का प्रयत्न करते हैं। पर उनकी शान्तिपूर्ण ढंग से न्याय की रक्षा करने की इच्छा पूरी नहीं होती। अतः वे महाभारत के भयानक युद्ध का आयोजन करते हैं।

नीतिवान तो कृष्ण है ही। उनकी नीति का आधार सामने उपस्थित स्थिति ही है। इसीलिए वे साम, दाम, दण्ड, भेद आदि चारों नीतियों का क्रमशः आश्रय लेते

हुए दिखाए गये हैं। अन्यायी दुर्योधन का पक्ष कमजोर करने की कोशिश से ही वे साम-दाम नीतियों का आश्रय लेकर कर्ण को लोभ-लालच भी देते हैं, ताकि वह पाण्डवों के साथ मिल जाए। मतलब यह है कि कृष्ण साम, दाम, भेद, दण्ड आदि चारों नीतियों में समय पर काम लेना जानते हैं। वास्तव में महाभारत में पाण्डव-पक्ष की ओर से जो कुछ भी किया जाता है, वह सब श्रीकृष्ण की नीति का ही परिणाम होता है। इन्द्र यदि ब्राह्मण का वेश धारण करके कर्ण से कवच-कुण्डल का दान माँगने जाता है, तो कृष्ण की नीति से ही जाता है। कुन्ती का कर्ण के पास जाने की प्रेरणा-स्रोत भी कृष्ण ही है।

इसके बाद श्रीकृष्ण हमें कुरुक्षेत्र के मैदान में अर्जुन का सारथी बनकर उसका रथ हाँकते हुए दिखाई देते हैं। वे अपनी चतुराई से बार-बार कर्ण के तीखे बाणों और चोटों से अपने प्रिय शिष्य और बहनोई अर्जुन की रक्षा करते हैं। उन्हीं की नीति से भीम का बेटा घटोत्कच युद्ध में उतर कर तहलका मचा देता है। बाद में कर्ण को अर्जुन के लिए रखा एकघ्नी (अमोघ) अस्त्र उस पर चलाना पड़ता है। इस प्रकार कृष्ण की नीति के कारण अर्जुन का रास्ता चारों तरफ से सुरक्षित हो जाता है। पाण्डव विजय की ओर भी बढ़ जाते हैं।

कृष्ण युद्ध में हर प्रकार से शत्रु का नाश करने की नीति पर ही चलते हैं। उसी कारण कर्ण का रथ फंस जाने पर, उसे निहत्था देखकर जब अर्जुन उस पर प्रहार करना चाहता, तो श्रीकृष्ण उससे कहते हैं—

कहें जो पाल उसको, धर्म है, यह,
हनन कर शत्रु का सत्धर्म है यह,
क्रिया को छोड़ चिन्तन में फंसेगा,
उलटकर काल तुझको ही डसेगा।

इतना सब कुछ होने पर भगवान कृष्ण कवि दिनकर की भावना और मान्यता के अनुरुप मानवता के महान गुणों के पारखी और प्रशंसक हैं। उसी कारण जब कर्ण की मृत्यु पर युधिष्ठिर प्रसन्न होता है, तो कृष्ण गहरे शोक में डूब जाते हैं। वे कर्ण के सभी अच्छे गुणों की प्रशंसा करते हैं। यहाँ कवि ने हमारे सामने कृष्ण के मानवीय रूप को ही अधिकाधिक उभारा है। कर्ण की प्रशंसा करते हुए—

मगर, जो हो, मनुज सुवरिष्ठ था वह,
धनुर्धर ही नहीं, धर्मिष्ठ था वह,
तपस्वी, सत्यवादी था व्रती था,
बड़ा ब्रह्मण्य था, मन से यती था।

इस समूचे विवेचन-विश्लेषण से स्पष्ट है कि कृष्ण का जीवन चरित्र और नीति सभी कुछ न्याय की रक्षा पर आधारित है। अन्याय और अनीति का नाश करना ही उनका लक्ष्य था। इसी दृष्टि से 'रश्मिरथी' काव्य से भगवान कृष्ण का चरित्र सफल है। कवि ने उनमें भगवान और मानवता दोनों के गुणों का समावेश बड़ी सफलता से किया है। इसी में उनके अवतारी स्वरुप की सार्थकता भी है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
डी. के. कालेज डुमराँव
बक्सर (बिहार)